Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

नारी अस्मिता की आवाज़ : अंजु दुआ 'जैमिनी'

Vivek Gupta[1]* Dr. Sanju Jha[2]

[1]Research Scholar, Maharaj Vinayak Global University, Ajmer, Jaipur, Rajasthan

[2]Department of Hindi, Maharaj Vinayak Global University, Ajmer, Jaipur, Rajasthan

सारांश– *मेरे शोध पत्र का उद्देश्य बहुपठित साहित्यकार और नारी अधिकारों की पैरोकार अंजु दुआ 'जैमिनी' के साहित्य में उनकी नारी के प्रति दृष्टि और नारी के हक़-हक़ूक की आवाज़ की खोजबीन करना है।*

नारी सदा-सर्वदा से ही दलित और शोषित रही है। सृष्टि-सर्जक होने के पश्चात भी नारी के लिए आवाज़ उठाने वाले लोग कम ही हैं। हिंदी के आधुनिक साहित्यकार, विशेषत: 'महिला साहित्यकार' नारी उत्थान हेतु प्रयासरत हैं। औरत को बराबरी का हक़ दिलाने के लिए उन्होंने कलम को अपना हथियार बनाया है। अंजु दुआ 'जैमिनी' इन्हीं साहित्यकारों की भीड़ से गूंजती हुई एक अलग ही आवाज़ है।

मूल शब्द :- *अंजु दुआ 'जैमिनी', नारी, स्त्री, औरत, अस्मिता, साहित्य।*

----------X----------

प्रस्तावना

'नारी' सृष्टि में सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है। नारी जाति के बिना सृष्टि की कल्पना करना भी मुश्किल है। ईश्वर ने सृष्टि की गति को निर्बाध रूप से बनाए रखने हेतु नारी की रचना की है। नारी को मातृत्त्व का ऐसा दायित्त्व और वरदान प्रदान किया गया है, जिसके बिना 'सजीव' का कोई अस्तित्व नहीं है। इतिहास गवाह है कि नारी ने इस वृहद दायित्त्व का निर्वहन बहुत धैर्य और हिम्मत से किया है। परंतु सृष्टि में इतनी महत्त्वपूर्ण होने के पश्चात भी नारी को वह स्थान नहीं मिल पाया है जिसकी वह अधिकारी है। नारी को आज भी पग-पग पर तिरस्कार झेलना पड़ता है। आज महत्त्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक निर्णयों में नारी की भागीदारी नगण्य है। सामाजिक अनुष्ठानों और प्रतिष्ठानों पर पुरुष ने अपना वर्चस्व स्थापित कर, स्त्री को उसके स्थान से विस्थापित कर दिया है। शोषण की यह परिपाटी बहुत पुरानी है। मध्यकाल में नारी-शोषण का बहुत ही दुर्भिक्ष रूप देखने को मिलता है। इस काल में औरत को पर्दे और घर की चारदीवारी तक ही सीमित कर दिया। परंतु आधुनिक काल आते-आते शोषण और रूढ़िवादिता की बेड़ियाँ कुछ ढ़ीली पड़ने लगीं। अंग्रेजी राज में महिलाओं से संबंधित बाल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा-विवाह इत्यादि के लिए कानून बनाकर उन्हें लागू करवाया गया। इन सब प्रयासों से उसकी तात्कालिक स्थिति में कुछ सुधार तो अवश्य हुआ परंतु यह सुधार महिलाओं को उस स्थान तक ना ले जा सका, जो महिलाओं को एक समाज में सम्मानित स्थान दिला सके। परंतु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात परिस्थितियां कुछ बदली हैं। महिलाओं को कानूनी रूप से पुरुषों के बराबर का स्थान प्रदान किया गया है और समय-समय पर आवश्यकता अनुसार, इन कानूनों में संशोधन भी किया जाता रहा है। महिलाओं को बहुत से स्थानों पर वरीयता प्रदान की गयी है। परंतु इतना नाकाफ़ी है। औरत आज भी दलित और शोषित है। समाज का एक बड़ा तबका इन्हें आज भी कमज़ोर, कमतर और बोझ ही मानता है। भारतीय समाज में आज भी लड़की का जन्म एक अस्वागतीय घटना होती है - 'भारतीय समाज में स्त्रियों की जो दुर्दशा हो रही है, वह अन्य किसी भी देश की स्त्रियों की ना हुई होगी और न होगी। जिस घर में ईश्वर की कृपा से एक लड़की का जन्म हुआ, फिर देखिए उसके माँ-बाप को किस प्रकार से नाना-प्रकार की चिंताओं का शिकार बनना पड़ता है।'[1]

परंतु समाज में आज साहित्यकारों का एक बड़ा तबका कलम के माध्यम से औरत की लडाई लड़ रहा है और उसे इंसाफ़ दिलाने के लिए तत्पर है। कलम को हथियार बना कर औरत की लड़ाई लड़ने का प्रयास किया जा रहा है ताकि औरत के विरुद्ध हो रहे अन्याय को आवाज़ मिल सके। साहित्यकार निरंतर अपनी साहित्य साधना के माध्यम से औरत का दु:ख-दर्द, समाज के सामने ला कर, नारी की

www.ignited.in

पीड़ा को उजागर करते रहें हैं। आधी आबादी के अधिकारों की जंग में हिंदी साहित्यकारों का बहुमूल्य योगदान है। हिंदी साहित्यकारों ने लिंग के दायरे तोड़कर औरत के विरुद्ध हो रहे अत्याचार को अपनी लेखनी के माध्यम से चित्रित किया है। इन साहित्यकारों की भीड़ में अलग अस्तित्व रखने वाली अंजु दुआ 'जैमिनी', नारी अधिकारों की पैरोकार बन कर उभरी हैं। हरियाणा के सोनीपत में जन्मीं अंजु का जन्म उच्च-मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ है। अंजु ने समाज और जीवन के हर पहलू का बारीकी से निरीक्षण कर, उसे अपनी कलम के माध्यम से कागज़ पर उतारा है। परंतु स्त्री के जीवन और भावनाओं को शब्दों में पिरोने में इन्हें विशेष महारत हासिल है। इन्होंने औरत के जीवन के हर पड़ाव को अलग-अलग स्तर पर विश्लेषित कर, उसका लेखा-जोखा अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत कर, औरत की आवाज़ को बुलंद किया है। नारी के विषय में इनकी दृष्टि वृहत्तर है – **'नारी एक रहस्य है।'**[2]

अंजु के साहित्य में नारी प्रश्न पर बड़ी गंभीरता से चिंतन-मनन किया गया है, फिर चाहे वह कहानी हो, कथा हो, कविता हो, लघु कथा हो या फिर लेख हो, अंजु ने हिंदी साहित्य की सभी विधाओं के माध्यम से 'नारी' पर गंभीरता से विचार किया है और 'नारी अस्मिता' की आवाज़ को बुलंद किया है। अंजु 'नारी' को लेकर कितनी गंभीर हैं इसका अंदाज़ा केवल इसी बात से लगाया जा सकता है कि हिंदी साहित्य में 'नारी' को लेकर उदासीनता और असमान व्यवहार से खिन्न होकर बड़े-बड़े नामचीन साहित्यकारों की आलोचना करने से भी पीछे नहीं हटती। इन लेखकों की विरोधाभासी बातें अंजु को नहीं पचती हैं – **'प्रेमचन्द ने एक जगह लिखा कि यदि पुरुष में स्त्री के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है और यदि स्त्री में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा बन जाती है। यशपाल ने दो विरोधाभासी बातें कही हैं। वे स्त्री के प्रेम को पुरुष जीवन में बाधक मानते हैं। दूसरी ओर वे स्त्री-आकर्षण को पुरुष के जीवन में विनाशकारी नहीं मानते। वृन्दावन लाल वर्मा ने दो टूक कहा है कि एक स्त्री का शासन स्वीकारना सबसे कठिन काम है।'**[3]

समाज का कोई भी मुद्दा अंजु की पैनी दृष्टि से नहीं बच पाया है। अंजु बच्चियों की गिरती संख्या पर चिंतित है। गिरता लिंगानुपात उन्हें आंदोलित करता है – **'यह समाज की बर्बरता है कि वह महिलाओं को स्वतन्त्रता देना तो दूर, उन्हें जन्मने के अधिकार से भी वंचित रखता है।'**[4]

लड़कियों से होने वाली छेड़छाड़ आज बेहद संवेदनशील और गंभीर मुद्दा है। लड़कियां इसी डर के चलते पढ़ने और काम करने बाहर नहीं निकलती, क्योंकि उन्हें घर से बाहर छिछोरों की छेड़छाड़ का सामना करना पड़ता है। वैसे अंजु की दृष्टि में इस कुकृत्य में कुछ हद तक महिलाओं की स्वयं को कमज़ोर मान लेने की मानसिकता भी जिम्मेदार है। अंजु का मानना है कि औरत को किसी अन्य के सामने मदद के लिए हाथ फ़ैलाने से अच्छा होगा कि वह स्वयं ही सशक्तिकरण हासिल करे – **'छेड़छाड़ को रोकने के लिए सबसे पहले लड़की को थोडा बोल्ड होना चाहिए। उसमें विरोध जतलाने की क्षमता होनी चाहिए। उसे अपना शारीरिक और मानसिक बल मजबूत करना होगा।'**[5]

लड़कियों को समाज का सामना करते समय आत्मविश्वास से लबालब होना चाहिए। अंजु, नारी को स्वयं को एक मजबूत स्थिति में ले आने की पक्षधर हैं। वह नारी की मजबूती का सबसे बड़ा हथियार शिक्षा और जागरूकता को मानती हैं। इनकी दृष्टि में शिक्षा ऐसी शक्ति है जो किसी भी इंसान के सशक्तिकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से नारी का भी सशक्तिकरण सुनिश्चित किया जा सकता है – **'विदुषियों से यह समाज बहुत डरता है। ज्ञान की अविरल धारा के आगे बड़े-बड़े नतमस्तक हो जाते हैं।'**[6]

परंतु लड़के-लड़की की शिक्षा में भेदभाव अंजु को हज़म नहीं होता। शिक्षा को लेकर, लड़कियों के साथ किए जाने वाले भेदभाव से अंजु उद्वेलित हैं। लड़कियों पर थोपी जाने वाली शिक्षा की अंजु सख्त मुखालफ़त करती हैं। शिक्षा को लेकर लड़कियों की मर्जी जानने की कोशिश नहीं की जाती – **'आज भी लड़कियों से यही अपेक्षा की जाती है कि वे उतना ही पढ़ें, जितना विवाह के लिए आवश्यक है। लड़की डॉक्टर-इंजीनियर बनना चाहती है तो उसे रोका जाता है।'**[7]

शिक्षा प्राप्ति के पश्चात रोज़गार भी एक विषय है जहाँ महिलाओं के साथ भेदभाव होता रहा है। उन्हें अधिक जिम्मेदारी वाला काम केवल इसलिए नहीं दिया जाता क्योंकि औरतें स्वभाव से मृदु होती

हैं और वे ज़िम्मेदारी वाले काम को 'हैंडल' नहीं कर पाएंगी। उन्हें ऐसे काम दिए जाते हैं जो पुरुष के करने के लायक नहीं होते – **'कौन-सा कैरियर लड़कियों के लिए सही रहेगा, यह समाज तय करता है, टीचर, नर्स, ब्यूटीशियन, पर्सनल असिस्टेंट आदि पद लड़कियों के लिए बेहतर माने जाते हैं, क्योंकि ये सभी समाज द्वारा तय किए जाते हैं।'**[8]

लड़कियों को उच्च पदों पर जाने से रोकने के लिए तमाम प्रयास किए जाते हैं – **'उच्च पदों पर आने से लड़कियों को रोका जाता है। उन्हें शुरू से ही सेविका बनने की ट्रेनिंग दी जाती है। महिला बॉस को सहने की आदत पुरूषों को नहीं डाली जाती।'**[9]

लड़कियों के होश संभालते ही नारी के कंधों पर जिम्मेदारियों का बोझ लादने की कवायद शुरू कर दी जाती है। लड़की के पैदा होते ही उम्मीदों की फ़सल बो दी जाती है और उस फ़सल की कटाई, उसके जीवन की अंतिम यात्रा तक की जाती है – **'स्त्री बनकर जन्मना आसान है, पर जीना नहीं'**[10]

स्त्री के प्रति इस दोहरे सामाजिक रवैये से अंजु इत्तेफ़ाक नहीं रखती। नारी के प्रति इस रवैये से उनका मन खिन्न है, वह अपना गुस्सा प्रकट करती हैं – **'स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं और उन्हीं के दम पर दुनिया चल रही है। दोनों की अपनी महत्ता है। सब कुछ समान है। फिर एक को लाड़ और दूसरे को ताड़ना क्यों मिलती है?'**[11]

नारी की दयनीय स्थिति के लिए अंजु कुछ हद तक 'नारी' को भी जिम्मेदार मानती हैं। उनका मानना है कि नारी को अपनी लड़ाई स्वयं ही जारी रखनी पड़ेगी और इस लड़ाई को आगे तक ले जाना होगा। उसे समाज में अपनी भूमिका बदलने के लिए विद्रोह करना ही होगा। नारी को भीड़ से निकल कर, अपने लिए एक अलग स्थान बनाना होगा। हालांकि नारी की स्थिति में कुछ सुधार अवश्य आया है परंतु यह सुधार और जागरूकता उस स्तर तक नहीं पहुँच पाया है कि उसे अधिकार बिना मांगे मिल सकें। एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है बढ़ी हुई जागरूकता केवल बड़े शहरों और कस्बों तक ही सीमित है। इसका मुख्य कारण पुन्सवादी मानसिकता है। पुरुष यह नहीं चाहता कि नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो – **'स्त्री में परिवर्तन आया, लेकिन पुरुषवादी मानसिकता टस-से-मस नहीं हुई, वही सदियों पुरानी मानसिकता कायम है।'**[12]

अंजु पुरुषवादी सामाजिक पैरोकारों को समझाना चाहती है कि परिस्थितियां अब बदल गयी हैं। नारी पहले की तरह कमज़ोर नहीं है न ही अब वह अपने अधिकारों से अनभिज्ञ है। अब 'औरत' की लड़ाई मुखपृष्ठ पर आ गयी है। उन्होंने स्वयं ही अपने अधिकारों के संघर्ष की मशाल को थाम लिया है – **'आधुनिक युग में स्त्रियों के पास अधिकार हैं और वे थोडा-बहुत उनके प्रति जागृत हैं। यही वजह है कि वे अपना शोषण एक सीमा तक ही सहन करती हैं। क्या जरुरी है उनका शोषण करके उन्हें साथ रहने को मजबूर किया जाए ? रावण-सा अहं लेकर घूमने की परंपरा को कभी तो टूटना होगा।'**[13]

औरत को अपना भविष्य स्वयं ही तय करना होगा। उसकी जीवनयात्रा आंसुओं खड़िया चाक से नहीं वरन खुशियों की स्याही से लिखी जानी चाहिए। उसके लिए क्या अच्छा है, क्या बुरा, क्या सुख है, क्या दुःख है, इसका निर्णय स्वयं औरत को करने देना चाहिए। औरत को अपने लिए बंधे-बंधाए नियमों की बेड़ियों को तोडना होगा।

उपसंहार

अंजु दुआ 'जैमिनी' हिंदी साहित्य में एक सुस्थापित साहित्यकार हैं। उनकी लेखनी विशेषत: महिलाओं का दर्द प्रकट करती है। अंजु औरत की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त करती हैं। परंतु अंजु के विचार केवल, स्त्री की चिंता तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि अंजु औरत की स्थिति पर गहन विचार कर, समस्या का समाधान देने की एक सफल कोशिश भी करती दिखाई देती हैं। अंजु का मानना है कि 'औरत' के साथ सदियों तक अन्याय होता आया है, परंतु औरत के साथ हो रहे इस अन्याय के लिए कुछ हद तक औरत स्वयं भी ज़िम्मेदार है। औरत को अपने अंदर की शक्ति को पहचानना होगा। अपने विरुद्ध हो रहे अन्याय और अत्याचार से स्वयं ही लोहा लेना होगा। औरत को किसी मसीहा का इंतज़ार किए बिना, हाशिए पर पड़ी अपनी लड़ाई को मुख-पृष्ठ तक लेकर जाना होगा। तभी औरत को अधिकार मिल सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, पृ.-61, सं-संजय गर्ग, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110002
2. हक़ गढ़ती औरत, पृ.-9, अंजु दुआ जैमिनी, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली-110002
3. वही, पृ.15
4. वही, पृ-23
5. वही, पृ.-28
6. मोर्चे पर स्त्री, पृ.-11, अंजु दुआ जैमिनी, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली-110002
7. हक़ गढ़ती औरत, पृ.-39, अंजु दुआ जैमिनी, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली-110002
8. हक़ गढ़ती औरत, पृ.-39, अंजु दुआ जैमिनी, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली-110002
9. वही, पृ.-40
10. मोर्चे पर स्त्री, पृ.-09, अंजु दुआ जैमिनी, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली-110002
11. वही, पृ. 11
12. हक़ गढ़ती औरत, पृ.-57, अंजु दुआ जैमिनी, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली-110002
13. वही, पृ.- 87

Corresponding Author

Vivek Gupta*

Research Scholar, Maharaj Vinayak Global University, Ajmer, Jaipur, Rajasthan

E-Mail – matriayu@gmail.com